United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी साहित्य

डॉ. मोदुमपल्ली संपत
सहायक आचार्य (अंशकालिक)
हिंदी विभाग, निजाम कॉलेज, हैदराबाद, तेलंगाना

शोधसार:

भारतीय ज्ञान परंपरा एक निर्मल, निष्कल, पवित्र निर्धारिणी है। जिसमें सहस्रों ऋषि-मुनियों की आस्था, मूल्य, आदर्श, दर्शन, ज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, पद्धतियाँ, कर्म, भक्ति एवं जीवंत भावनाएँ समाहित हैं। यह परंपरा किसी एक तत्व को लेकर चलने वाली नहीं, बल्कि एक व्यापक विराट चेतना है, जिसने अपने अंतस में भारत के कण-कण में समाहित ज्ञान को स्थान प्रदान किया है। यह ज्ञान परंपरा सहस्रों सूर्यों की रश्मियों के समान अनंत प्रकाश बाँटती है। जिसमें ज्ञान की समस्त धाराएँ अपने-अपने स्थान पर तो चमकती ही हैं, साथ ही एक-दूसरे के साथ संपूर्ण होकर दिव्यगुणित हो उठती हैं। यही प्रकाश बिंदु भारतीय ज्ञान परंपरा है।

इस ज्ञान परंपरा की निर्धारिणी में यदि हिंदी साहित्य के प्रतिबिंब का दिग्दर्शन किया जाए तो वह भी हीरक मणि के समान द्योतित होता हुआ नजर आता है। भारतीय ज्ञान परंपरा है क्या? इस जिज्ञासा के मन में उठते ही कल्पना तत्काल वेदों की ओर गमन करती है और वेद भारतीय संस्कृति, ज्ञान और सभ्यता का मूल हैं। उन्हीं से समस्त भाषाओं का, ज्ञान के समस्त स्वरूपों का जन्म हुआ है। संस्कृत की पुत्री कही जाने वाली हिंदी उसी ज्ञान को विभिन्न विधाओं के रूप में प्रत्येक जिज्ञासु तक पहुँचाती है।

इसी ज्ञान परंपरा का निर्वहन करते हुए हिंदी साहित्य अपने कर्मपथ पर अग्रसर होता है। हिंदी साहित्य से मंडित भारतीय ज्ञान परंपराएँ सनातन धर्म के वैशिष्ट्य से परिपूर्ण होकर इस विश्व को निरंतर परिपूर्णता का आभास कराती रही हैं। उसका प्रभाव विश्व को प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त किए हुए है। भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग—प्राचीन जीवन मूल्य, पंच महायज्ञ, षोडश संस्कार, तीन ऋण, भारतीय आयुर्वेद पद्धतियाँ, भारतीय शिक्षा पद्धति, वैदिक ज्ञान, उपनिषदों में निहित विविध विद्याएँ, पुराणों में निहित व्यवहारिक ज्ञान, कौशल की अथाह सामग्री, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को सम्यक आकार देने वाली अष्टांग योग पद्धतियाँ—प्रकृति के प्रति भारतीय साहित्य में निहित अद्‌भुत पोषण, स्वास्थ्य व संरक्षण चेतना, दर्शन शास्त्रों में व्याप्त आध्यात्मिक ऊर्जाएँ विभिन्न शक्तियों का रूप धारण कर विश्व के कण-कण में भारतीय ज्ञान परंपराओं की सुवास बनकर अभिव्यक्त होती हैं।

मुख्य शब्द:
परंपराएँ, ज्ञान, कौशल, साहित्य, हिंदी विधाएँ, भारतीय, संस्कृति।

प्रस्तावना:

United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

हिंदी साहित्य जगत ज्ञान का यह सूर्य है, जो विभिन्न विधा रूपी रश्मियों से चमकता हुआ संपूर्ण संसार को आलोकित करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रवाहित करने वाले इस साहित्य सूर्य की ओर यदि दृष्टिपात किया जाए तो गद्य, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, एकांकी, नाटक, रिपोर्ताज, यात्रा साहित्य आदि रश्मियों के रूप में यह संसार की विभिन्न यथार्थ भावनाओं को समाज के समक्ष प्रकाशित करने में अग्रणी है। यह जनसामान्य को नवीन चेतना, जागरूकता और सजगता की ओर लेकर जाता है।

यदि 'परंपरा' शब्द की व्याख्या की जाए तो परंपरा वह संपत्ति है जो बिना रुके सतत गति से अपने कर्मपथ की ओर अग्रसर होती रहती है। यह परंपरा अपने अंदर समेटे हुए ज्ञान को चारों ओर प्रकाशित करती हुई, दुःख और वेदना को भी अपने भीतर समाहित करती है तथा कल्पना और भाव से उसमें ऊर्जा भरकर जनमानस तक पहुँचाती है।

साहित्य लेखन की परंपरा:

प्राचीन युग में साहित्य के इतिहास से संबंधित स्वतंत्र ग्रंथ लिखने की परंपरा भारत में ही नहीं, बल्कि पश्चिम में भी नहीं मिलती। फिर भी पूर्ववर्ती कवियों एवं साहित्यकारों के नामोल्लेख करने की प्रवृत्ति अनेक भारतीय लेखकों में दृष्टिगोचर होती है। भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में अपने से पूर्ववर्ती आचार्यों के नामों का उल्लेख किया है। हिंदी में महाकवि तुलसीदास ने भी अपने से पहले राम गुणगान करने वाले कवियों का उल्लेख किया है।

गुरु-शिष्य परंपरा:

भारतीय ज्ञान परंपराओं में गुरु-शिष्य परंपरा का अपना अनूठा स्थान है। ऋषि-मुनियों ने खुले आकाश के नीचे, वृक्षों की छाया में, प्राकृतिक वातावरण के मध्य अपने शिष्यों को आध्यात्मिक अनुभूतियों का दर्शन कराया। कबीरदास कहते हैं—

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपणे, जिन गोविंद दियो बताय॥

समाज सुधार की परंपरा:

महाकवि कबीरदास ने अपनी साखियों के माध्यम से समाज को सुधारने और सही दिशा दिखाने की परंपरा का प्रवर्तन किया। जाति-पाति और अंधविश्वास का विरोध करते हुए उन्होंने कहा—

जोगी गोरख गोरख करे, हिंदू राम न उखराई।
मुसलमान कहे एक खुदाई, कबीरा का स्वामी घट-घट समाई॥

साहित्य में निहित अद्भुत भक्ति परंपरा:

मीरा और जायसी ने भक्ति का व्यापक प्रचार किया। मीरा कहती हैं—

मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोय॥

कबीर कहते हैं—

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य:

संत साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा में अद्वितीय है। कबीर कहते हैं—

संतऐसेचाहिए,जैसासूपसुभाय।
सार-सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय॥

निष्कर्ष:

अंत में कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपराओं का विश्व पर अमिट प्रभाव है। राजनीति, समाजशास्त्र, संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान, कौशल, योग, व्यवहार, भाषा और विज्ञान— सभी क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपराएँ अपना प्रभाव व्यक्त कर रही हैं। हिंदी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा की वह धारा है जिसमें भक्ति भी है, ज्ञान भी है, शिक्षा भी है और समाज सुधार भी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

डॉ. मीरा — मध्ययुगीन हिंदी कृष्ण भक्ति धारा, 1968
डॉ. वासुदेव सिंह — कबीर (साहित्य और साधना), अभिव्यक्ति प्रकाशन, 1994
आचार्य रामचंद्र शुक्ल — हिंदी साहित्य का इतिहास, 2013
डॉ. नगेंद्र — हिंदी साहित्य का इतिहास, 2015
हजारी प्रसाद द्विवेदी — कबीर, राजकमल प्रकाशन, 2018
योगेंद्र सिंह — संत रैदास, लोकभारती प्रकाशन, 2019